



कृषि नवाचार से पोषण क्रांति की ओर

सुनीता अरोड़ा

॥ विश्व खाद्य दिवस 2026 का विषय Innovate Today, Nourish Tomorrow (आज नवाचार, कल पोषण) यह बताता है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए पर्याप्त, सुरक्षित, पौष्टिक और टिकाऊ आहार सुनिश्चित करने के लिए आज की आवश्यकता है नवाचारों को अपनाना। आहार केवल भूख मिटाने के लिए नहीं है बल्कि स्वास्थ्य, उत्पादकता, आर्थिक विकास और सामाजिक कल्याण की आधारशिला भी है। इसलिए भविष्य की खाद्य सुरक्षा का रास्ता खेत से लेकर थाली तक होने वाले निरंतर नवाचारों से होकर गुजरता है। आज दुनिया अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है। इनमें बढ़ती आबादी, जलवायु परिवर्तन, जल संसाधनों पर दबाव, मृदा की घटती गुणवत्ता, प्राकृतिक संसाधनों का क्षरण और खाद्य उत्पादों का अपव्यय जैसी समस्याएं खाद्य एवं पोषण को प्रभावित कर रही हैं। आज आवश्यकता ऐसी खाद्य प्रणाली की है, जो अधिक उत्पादन के साथ बेहतर पोषण, संसाधनों का संरक्षण और किसानों की आय सुनिश्चित करें। ॥

आधुनिक कृषि में नवाचार का आशय केवल अत्याधुनिक मशीनों या उपकरणों का प्रयोग नहीं है। इसका आशय है कि उन्नत बीज, उर्वर खेत, जैव सुदृढ़ीकृत फसलें, सूखा एवं गर्मी सहनशील फसलें, कम समय में अधिक उत्पादक फसलें, सूक्ष्म सिंचाई, सटीक खेती, ड्रोन, सेंसर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल कृषि सेवाओं आदि से कृषि को अधिक दक्ष एवं आधुनिक बनाना। वहीं दूसरी ओर मौसम आधारित सलाह और डिजिटल प्लेटफार्म किसानों को सही समय पर निर्णय लेने में सहायता कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त सटीक कृषि द्वारा जल, उर्वरकों और कृषि रसायनों का प्रयोग



आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। इसमें लागत कम होने के साथ ही प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में भी मदद मिलती है। इसी तरह, एकीकृत कृषि, संरक्षण कृषि, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और स्वास्थ्य पर आधारित तकनीकें भविष्य की टिकाऊ खेती को मजबूत आधार दे सकती हैं।

खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल भरपेट आहार नहीं है। स्वस्थ समाज के लिए प्रोटीन, विटामिन, खनिज और अन्य आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर विविध आहार जरूरी हैं। इसलिए कृषि में पोषण केंद्रित दृष्टिकोण को अपनाना आवश्यक है।

श्री अन्न, दलहन, तिलहन, फल, सब्जियां और स्थानीय पोषक फसलों का उत्पादन एवं उपयोग बढ़ाना इस दिशा में जरूरी कदम है। जैव संवर्धित फसलों के माध्यम से आयरन, जिंक और अन्य पोषक तत्वों से समृद्ध फसलों का विकास कुपोषण की चुनौती से निपटने के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकता है।

भविष्य की खाद्य सुरक्षा सीधे जल और मृदा के संरक्षण से जुड़ी है। जलवायु परिवर्तन की मार से कृषि सीधे तौर पर प्रभावित होती है। ऐसे में कम जल से अधिक उत्पादन, सूक्ष्म सिंचाई, वर्षा जल संचयन, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन, पलवार और जल संरक्षण तकनीकों का ज्ञान होना जरूरी है।

इसी तरह मृदा में जैविक पदार्थों की मात्रा बढ़ाना, संतुलित पोषक तत्वों का प्रयोग, फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन, फसल विविधीकरण आदि मृदा



समृद्ध फसल है खाद्य सुरक्षा का आधार

की उर्वराशक्ति को बनाये रखने के लिए आवश्यक है।

कटाई उपरांत होने वाली हानि किसानों की आय और देश की खाद्य उपलब्धता दोनों को प्रभावित करती है। आधुनिक भंडारण, कोल्ड स्टोरेज, उपयुक्त पैकेजिंग, बेहतर प्रसंस्करण और समुचित परिवहन व्यवस्था से फल, सब्जियों और अन्य उत्पादों के अपव्यय को कम किया जा सकता है।

कृषि प्रसंस्करण में नवाचार किसानों को कच्चे उत्पाद की बजाय मूल्यवर्धित उत्पाद बेचने का अवसर देता है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और उद्यमिता के नये अवसर सृजित होते हैं।

किसी भी नवाचार की सफलता तभी

संभव है जब वह किसान की वास्तविक आवश्यकता और आर्थिक क्षमता के अनुरूप हो। विशेष रूप से छोटे और सीमांत किसानों तक नई तकनीकी की पहुंच, प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता और बाजार सुनिश्चित करना जरूरी है।

कृषि वैज्ञानिकों, किसानों, स्टार्टअप, कृषि उद्योग, सहकारी संस्थाओं, वित्तीय संस्थानों और नीति निर्माताओं के बीच मजबूत साझेदारी द्वारा ही नवाचार को प्रयोगशाला से खेत तक पहुंचाया जा सकता है। स्थानीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय ही इसे सफल और प्रभावी बना सकता है।

‘आज नवाचार, कल पोषण’ केवल एक थीम नहीं, बल्कि भविष्य की खाद्य व्यवस्था के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण है। इसका संदेश स्पष्ट है कि भविष्य की खाद्य एवं पोषण सुरक्षा के लिए आज ऐसे समाधान विकसित करने होंगे, जो उत्पादन बढ़ाने के साथ पोषण में सुधार करें, प्राकृतिक संसाधनों को बचाएं और किसानों को आर्थिक रूप से साथ-साथ सशक्त बनाएं।

विश्व खाद्य दिवस 2026 हमें यह संदेश देता है कि भविष्य की स्वस्थ थाली खेत में आज लिए गए निर्णयों से तैयार होगी। यदि नवाचार को प्रकृति अनुकूल, किसान केंद्रित और पोषण केंद्रित बनाया जाए तो कृषि केवल आहार उत्पादन का माध्यम ही नहीं रहेगी, बल्कि स्वस्थ समाज, समृद्ध ग्रामीण अर्थव्यवस्था और टिकाऊ भविष्य की मजबूत आधारशिला बनेगी।



पोषण सुरक्षा में फसलों की अहम भूमिका